डॉ.गो.रा.कुलकर्णी,
निवृत्त रीडर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या
महाविद्यालय,
सांगली ।

प्रमाण पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री रफीक चाँदसाहेब बंदीवाले ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल. हिन्दी उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध " उपेन्द्रनाथ ' अश्क ' के 'शहर में घूमता आईना" उपन्यास का अनुशीलन " मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। इसमें प्रस्तुत विचार एवं विवेचन मेरी जानकारी में मौलिक है । प्रस्तुत शोधकार्य के बारेमें मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

(शोध-निर्देशक)
डॉ.गो.रा. कुलकर्णी ।

सांगली ।
दिनांक २७:१२:१९९४ ।

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल के लघु-शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है ।

शोध-छात्र

(रफीक बंदीवाले)

कोल्हापुर ।

दिनांक :23:12:1994 ।

Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur-416 004.

प्राक्कथन

उपेन्द्रनाथ अश्क जी आधुनिक हिन्दी साहित्य को गद्यात्मक एवं पद्यात्मक विधाओं के क्षेत्र में बहुमुखी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देने की दृष्टिसे इनकी अपनी विशेषता उल्लेखनीय हैं। अश्क जी के सृजनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी संग्रह, काव्य नाटक, एकांकी, संस्मरण तथा रेखाचित्र आदि कृतियाँ बहुसंख्याक रूप में उपलब्ध होती हैं। साथ ही साथ उनके वैचारिक पक्ष का द्योतन कराने वाली भी अनेक स्फुट रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। उन्होंने प्रारंभिक छोटे उपन्यासों के बाद नायक चेतन को लेकर उपन्यासों की शृंखला ही खडी कर दी हैं। इन सभी उपन्यासों में चेतन को ही नायक बनाया है और सभी पात्र तथा घटनाएँ उसे घेर कर ही सार्थक होती हैं। अश्क जी ने जिस महागाथा की सृष्टि की है, वह उनके अपने जीवनानुभवों अनुभूतियों पर आधारित हैं। यह सब लेखक की आत्मकथात्मक जैसा ही लगता हैं। कुछ ऐसा महसूस होता है कि लेखक चेतन को माध्यम बनाकर अपनी ही जीवन गाथा लिख रहा हैं। यहाँ अश्क ने हिन्दी उपन्यास साहित्य की प्रचलित धारा से हटकर एक नवीन औपन्यासिक जगत का निर्माण किया हैं। उनकी अपनी स्वयं की अनुभूतियों के साथ-साथ समकालीन जीवन के अत्यन्त सघन, सुदीर्घ एवं चमत्कारी चित्र भी प्रस्तुत हुए हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है --

१) ग्रंथालय - शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

२) ग्रंथालय - श्री स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, कोल्हापुर।

३) ग्रंथालय - रा.छ.शाहू महाविद्यालय, कोल्हापुर।

इन सभी ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों के प्रति मैं सहृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मेरा परम भाग्य मानता हूँ कि मुझे श्रध्देय गुरूवर डॉ.गो.रा.कुलकर्णी, जैसे प्रतिभा संपन्न मार्गदर्शक मिले। मेरा यह प्रयास उन्हीं के सहयोग से सफल

बना गया हैं। आपने अपना गुरूत्व मुझ पर उतना हावी कभी नहीं होने दिया जिससे कि मेरा वैचारिक अस्तित्व दब जाय। इन ऋणों के प्रतिपादन में आभार या धन्यवाद शब्दों से ऋण मुक्ति की कल्पना धृष्टता होगी। गुरूवर् के पुनीत चरणों में नतमस्तक होने के अलावा मैं और क्या कर सकता हूँ? गुरूवर्य डॉ.कुलकर्णी जी की धर्म पत्नी डॉ.अवंतिका कुलकर्णी जी ने भी मुझे इस कार्य के लिए प्रसन्नता के साथ प्रोत्साहित किया। उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे गुरूवर्य डॉ.व्ही.के.मोरे जी के ही आशीर्वाद का फल यह लघु-शोध-प्रबन्ध हैं। डॉ.मोरे जी से मुझे बार-बार प्रोत्साहन मिलने के ही कारण आज मैं जो भी हूँ और जो कुछ प्राप्त किया है यह सब उनकी ही कृपा तथा आशीर्वाद हैं। कबीर जैसे संत ने भी ईश्वर से पहिला मान गुरू को ही दिया हैं। अंत में मैं यह कहता हूँ कि डॉ.मोरे जी जैसे गुरू तथा मार्गदर्शक मिलने से ही मैं यहाँ तक आ पहुँचा हूँ। गुरूवर्य डॉ.मोरे जी की धर्मपत्नी श्रीमती मोरे जी ने भी मुझे इस कार्य के लिए प्रसन्नता के साथ प्रोत्साहित किया। उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

प्रा.सौ.एम.एस.जाधव मॅडम ने भी इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में विशेष सहायता तथा मार्गदर्शन किया हैं।उनके प्रति भी मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

गुरूवर्य प्रा.तिवले सर जी के प्रति भी मैं सहृदय से आभार प्रकट करता हूँ। उनके बारेमें मैं इतना ही कहूँगा कि प्रा.तिवले सर मेरे जीवन में एक गुरू के साथ-साथ एक दोस्त की तरह ही मुझे महसूस होते हैं।

मेरे दोस्त मधुकर जगताप का भी मैं आभार प्रकट करता हूँ,जिन्होंने मुझे समय - समय पर आर्थिक सहायता की। मेरे दूसरे साथी डी.ए.जगताप का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस शोध-प्रबन्ध के टंकलेखन में सहायता की।

मेरे साथी सुधाकर वाणी, संजय आडके, अनिल सालूंखे तथा वाय.बी.घस्ते का भी आभार प्रकट करता हूँ।

हिन्दुस्थान पेट्रोलियम के मेरे सभी स्टाफ साथी श्री यादव, मुल्ला, विटेकरी, देसाई, कोळी और एस.पी. का भी मैं सहृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे समय समय पर इस लघु-शोध प्रबन्ध के लिए अवकाश प्राप्त करा दिया और सहकार्य किया।

मेरे माता-पिता और भाई तथा बहनों के आशीर्वाद से मेरा यह कार्य सफल बना।

अंत में इस कार्य को सफल बनाने में जिनका सहयोग मिला उन सब का आभार प्रकट करता हूँ और यह लघु-शोध-प्रबन्ध विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(रफीक बंदीवाले)

कोल्हापुर।

दिनांक : 23:१२:१९९४।

- अनुक्रमणिका -

			पृष्ठ क्रमांक
प्रथम अध्याय	--	अश्क जी का जीवन परिचय	1 से 9
द्वितीय अध्याय	--	अश्क जी का कृतित्व	10 से 25
तृतीय अध्याय	--	"शहर में घूमता आईना" उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा	26 से 53
चतुर्थ अध्याय	--	"शहर में घूमता आईना" में चरित्र-चित्रण	54 से 106
पंचम अध्याय	--	"शहर में घूमता आईना" औपन्यासिक कला की दृष्टि से	107 से 127
		उपसंहार	128 से 135
		सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची	136 से 137